**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2019; SP7: 70-71

**निलेश कुमार**
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि. वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

**Correspondence**
**निलेश कुमार**
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि. वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

**(Special Issue-7)**
**"International Conference on Science and Education: Problems, Solutions and Perspectives"**
**(3rd June, 2019)**

# ऐतिहासिक चिंतन का उद्‌गम एवं विकास

## निलेश कुमार

**सारांश**
तत्वमीमांसा दर्शन के प्रख्यात दार्शनिक इतिहासकार आर.जी कॉलिंगवुड का अभिमत है कि मनुष्य चिंतनशील प्राणी है। अपने संबंध में चिंतन करते समय उसके हृदय में अचानक अपने पूर्वजों के विषय में ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा स्वयमेव प्रस्फुटित हुई कि वर्तमान का आविर्भाव कैसे हुआ। मानव हृदय में जिज्ञासा की इस जागृति ने मनुष्य को अतीत के कारणों में झांकने के लिए विवश कर दिया। अतीत संबंधी ज्ञान की उत्कंठा के परिणामस्वरूप इतिहास का उद्‌भव तथा इतिहास–चिंतन का श्रीगणेश हुआ। यहीं से साक्ष्यों के आलोक में यथार्थ–अतीत के प्रस्तुतिकरण की इच्छा इतिहास के रूप में प्रस्फुटित हो उठा। सतत चिंतन के परिणामस्वरूप एक अवधारणा बनी कि वर्तमान का आविर्भाव अतीत के गर्भ से हुआ है। इस प्रकार वर्तमान के परिवेश में अतीत की गवेषणा मानव प्रवृत्ति की विकासात्मक प्रक्रिया का इतिहास बन गया।

**Keywords:** ऐतिहासिक चिंतन, तत्वमीमांसा दर्शन

## प्रस्तावना
मनुष्य अजीजकालिक ज्ञान के अभाव में किसी कार्य में असफला नहीं प्राप्त कर सका है। चन्द्रमा के धरातल पर मानव अवतरण अचानक नहीं, अपितु अनेक प्रयासों का परिणाम रहा है। एक के बाद अनेक प्रयासों की त्रुटियों में सुधार करते हुए मनुष्य अपने लक्ष्य में सफल हुआ। पं. जवाहरलाल नेहरू का विश्वास है कि वर्तमान में सम्पूर्ण अतीत का मेरे साथ घनिष्ठ संबंध है। इस प्रकार पं. नेहरू ने भी कॉलिंगवुड की अतीत संबंधी अवधारणा की पुष्टि की है।

इतिहास–चिंतन के उद्‌गम के विषय में विभिन्न सभ्यताओं की अपनी विशिष्ट परंपरागत अवधारणाएँ रही हैं। इतिहास नामक अध्ययन शाखा की उत्पत्ति यूनान में मिलती है। इसका उद्‌गम बैद्धिक कार्य–व्यापार के महान उद्वेग की एक अभिव्यक्ति के रूप में हुआ। परीक्षा–सिद्ध गवेषणा के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ। 'हिस्तोरे' वह विशेष होता था जिससे वाद–विवाद के निबटाने के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद–विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला व्यक्ति इतिहास का जनक हेरोडोट्स था। इतिहास शब्द से उसका अभिप्राय खोज तथा अनुसंधान था। यूनानी जाति की ज्ञान पिपासा हिस्ट्री की परिभाषा में प्रस्फुटिक हो उठी। इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्‌गमस्थल प्राच्य–संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है।

मनान यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स ने इतिहास–चिंतन की आधारशिला का निर्माण किया। थ्यूसिडिडीज ने उस प्रसाद को विकसित किया। दोनों की अवधारणा इतिहास के चक्रात्मक गति में रही है। 'इति–ह–आस' इन तीन शब्दों संश्लिष्ट स्वरूप इतिहास है, इसका अर्थ है कि निश्चित रूप से ऐसा हुआ। इस आख्या के अनुसार अतीत के जिन वृत्तंतों को हम विश्वास के साथ प्रमाणित कर सकें, उसके इतिहास की श्रेणी में रखा ज सकता है। सामान्यतया जनसाधारण घटना–संबंधी ज्ञान को ही इतिहास की मान्यता देता है। घटना की व्याख्या में कारण–शृंखला का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। भारतीय इतिहास–चिंतन का यही मूल आधार रहा है।

प्रत्येक युग की परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप इतिहास–चिंतन का स्वरूप परिवर्तनशील रहा है। यूरोप में पुनर्जागरण तथा धर्म सुधार आन्दोलन, ईसाई इतिहास दर्शन एवं अवधारणा के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया थी। इन दोनों प्रतिक्रियाओं की चेष्टा उस प्राचीन विश्व संस्कृति की प्राप्ति थी जिसे खोया जा चुका था। क्रांतिकारियों एवं धर्म–सुधारकों ने चर्च की निरंकुशता तथा संकीर्णता की कटु

आलोचना की। धर्म तथा राजनीति में समीक्षात्मक बुद्धि तथा रुचि का प्रतिपादन किया। इसके लिए विभिन्न युगों का अवबोध तथा विभिन्न समस्याओं के मूल्यांकन की अपेक्षा की। प्राचीन साहित्य में रुचि के लिए जनसामान्य को यूनानी तथा रोमन इतिहास के अध्ययन तथा सोत्साह अनुकरण के लिए प्रेरित किया गया। ज्ञान तथा तथ्यों की सहायता से लारेंजा वल्ला ने चक्र के प्राधिकार तथा परंपरा को अस्वीकार किया। अनम्य तथा अपरिवर्तनशील तथ्यों का निरूपण करने के लिए समीक्षात्मक रीति–रिवाज को विकसित किया गया। परिणामस्वरूप यूनान की समीक्षात्मक बुद्धि पुनः प्रतिष्ठित हो उठी, इतिहास का अध्ययन ऐसे दृष्टांतों की गवेषणा के लिए किया, जिनसे मानव समाज शिक्षा ग्रहण कर सके। प्रलेखों का आलोचनात्मक अध्ययन इतिहास का प्रेरणा–स्रोत बन गया। सोलहवीं सदी को पाण्डित्य का युग कहा गया है। सत्ता तथा परम्परा का परित्याग कर आधुनिक मनुष्य ने तथ्यों से जूझने में गर्व का अनुभव किया। भाग्यवश पांडुलिपियों का विशाल भंडार उपलब्ध था। अतः गवेषणात्मक इतिहासकारों ने मूल्यांकन के सिद्धातों के आधार पर उन्हें परिशुद्ध करके सम्पादित किया। इसी समय से वैज्ञानिक युग का प्रारम्भ हुआ। साक्ष्य तथा अनुभव को ज्ञान का प्रामाणिक आधार माना गया। इतिहास की पुस्तकों में इटली के फड़कते हुए जीवन की ध्वनि मिलती है। इस नवीन शैली से सम्पूर्ण यूरोप प्रभावित हो उठा। बीसवीं सदी में इतिहासचिंतन का स्वरूप वैज्ञानिक होने लगा। कॉलिंगवुड तथा क्रोचे के अनुसार, ऐतिहासिक ज्ञान मानव–संबंधी ज्ञान का स्रोत है। क्रोचे ने सम्पूर्ण इतिहास को वर्तमान इतिहास कहा है। क्योंकि प्रत्येक इतिहास वर्तमान दृष्टिकोण से अतीत को देखता है। कॉलिंगवुड का प्रसिद्ध वाक्यांश–सभी इतिहास विचारों का इतिहास है। इस प्रकार इतिहासकारों ने इतिहास के अंतर्निहित गूढ़ रहस्यों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया। राष्ट्रीयता का भयावह परिणाम प्रथम विश्वयुद्ध (1914–19) तथा द्वितीय विश्वयुद्ध (1935–45) था।

## निष्कर्ष

बीसवीं सदी में इतिहास–चिंतन का स्वरूप सार्वभौमिक होने लगा। विश्वभ्रातृत्ववाद के परिवेश में इतिहास लिखा जाने लगा। एच.जी.वेल्स, टायन्बी तथा स्प्रेगलर ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि इतिहास–चिंतन का स्वरूप संकुचित तथा क्षेत्रीय नहीं, अपितु सार्वभौमिक होना चाहिए। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों को शृखलाबद्ध करके सार्वभौमिक इतिहास की रचना की तथा विश्वभ्रातृत्वाद को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। परिणामस्वरूप किसी राष्ट्र की समस्या को विश्व की समस्या मानकर उसका समाधान ढूँढ़ने का प्रयास किया जाने लगा। इस प्रकार प्रारम्भ में इतिहास–चिंतन अतृप्त ज्ञानतृष्णा को तृप्त करने का एक समाधान था, जो बीसवीं शताब्दी में समस्त मानवीय कार्यकलापों तथा सार्वभौमिक परिवेश में विश्वभ्रातृत्ववाद के रूप में विकसित हुआ। इतिहास–चिंतन का यही चरमोत्कर्ष है।

## संदर्भ–सूची

1. एंशिएट सौ ऑर्गनाइजेशन, कलकत्ता, 1912
2. हिस्टॉरिकल सोशल सिस्टम, 1837
3. यूरोपीयन सोशल ऑर्गेनाइजेशन, 1836
4. वल्ड सोशल इन्स्टीच्यूशन, 1832